निष्कलंक अवतार... हो रहा तुम्हारा इंतजार

bhaskar.com/amp/rajasthan/dungarpur/news/rajasthan-news-o-unreliable-incarnation-waiting-for-you-024109-3912051.html

February 16, 2019

हे निष्कलक भगवान...हो रहा है तुम्हार इंतजार। यानी जो अब तक अवतरित ही नहीं हुए। इस अवतार का इंतजार पिछले 300 साल से...



Bhaskar News Network

Feb 16, 2019, 02:41 AM IST

हे निष्कलंक भगवान...हो रहा है तुम्हार इंतजार। यानी जो अब तक अवतरित ही नहीं हुए। इस अवतार का इंतजार पिछले 300 साल से साबला हरिमंदिर में हो रहा है। हर रोज हजारों-हजार श्रद्धालु अपने घरों में विष्णु के रूप में अवतार लेने वाले कल्कि अवतार का इंतजार कर रहे है। तीन टांगों पर खड़े घोड़े पर बैठे इस अवतार पुरुष की प्रतिमा भी बनी हुई है और माना जा रहा कि जब घोड़े का चौथा पैर जमीन पर टिकेगा, तब कल्कि अवतार के रूप में भगवान विष्णु अवतरित होंगे। आज से बेणेश्वर मेले का आगाज हो रहा है। इसी से जुड़ी यह आस्था हजारों श्रद्धालुओं की अगाध भक्ति का पवित्र रूप है।

करीब 300 साल पहले साबला हरिमंदिर और बेणेश्वर धाम के आद्य पीठाधीश्वर संत मावजी महाराज की भविष्यवाणी के अनुसार 'संतन के सुख करन को, हरन भूमि को भार, हैं कलियुग अंत में निष्कलंक अवतार' अर्थात् सज्ञनों को सुख देने और पृथ्वी के सिर से पाप का भार उतारने के लिए कलियुग के अंत में भगवान का निष्कलंक अवतार होगा। संत मावजी महाराज ने स्पष्ट लिखा है 'श्याम चढ़ाई करी आखरी गरुड़ ऊपर असवार, दृष्टि कालिंगो सेंधवा असुरनी करवा हाण, कलिकाल व्याप्यो घणो, कलि मचावत धूम, गौ ब्राह्मण नी रक्षा करवा बाल स्त्री करवा प्रतिपाल...।'

अर्थात निष्कलंक अवतार के साथ एक चैतन्य पुरुष रहेगा। यह दैत्य-दानवों व चौदह मस्तकधारी

हे निष्कलंक अवतार... हो रहा तुम्हारा इंतजार

bhaskar.com/amp/rajasthan/dungarpur/news/rajasthan-news-o-unreliable-incarnation-waiting-for-you-024109-3912051.html

February 16, 2019

हे निष्कलंक भगवान...हो रहा है तुम्हार इंतजार। यानी जो अब तक अवतरित ही नहीं हुए। इस अवतार का इंतजार पिछले 300 साल से...



Bhaskar News Network

Feb 16, 2019, 02:41 AM IST

हे निष्कलंक भगवान...हो रहा है तुम्हार इंतजार। यानी जो अब तक अवतरित ही नहीं हुए। इस अवतार का इंतजार पिछले 300 साल से साबला हरिमंदिर में हो रहा है। हर रोज हजारों-हजार श्रद्धालु अपने घरों में विष्णु के रूप में अवतार लेने वाले कल्कि अवतार का इंतजार कर रहे है। तीन टांगों पर खड़े घोड़े पर बैठे इस अवतार पुरुष की प्रतिमा भी बनी हुई है और माना जा रहा कि जब घोड़े का चौथा पैर जमीन पर टिकेगा, तब कल्कि अवतार के रूप में भगवान विष्णु अवतरित होंगे। आज से बेणेश्वर मेले का आगाज हो रहा है। इसी से जुड़ी यह आस्था हजारों श्रद्धालुओं की अगाध भक्ति का पवित्र रूप है।

करीब 300 साल पहले साबला हरिमंदिर और बेणेश्वर धाम के आद्य पीठाधीश्वर संत मावजी महाराज की भविष्यवाणी के अनुसार 'संतन के सुख करन को, हरन भूमि को भार, हैं कलियुग अंत में निष्कलंक अवतार' अर्थात् सज्ञनों को सुख देने और पृथ्वी के सिर से पाप का भार उतारने के लिए कलियुग के अंत में भगवान का निष्कलंक अवतार होगा। संत मावजी महाराज ने स्पष्ट लिखा है 'श्याम चढ़ाई करी आखरी गरुड़ ऊपर असवार, दृष्टि कालिंगो सेंधवा असुरनी करवा हाण, कलिकाल व्याप्यो घणो, कलि मचावत धूम, गौ ब्राह्मण नी रक्षा करवा बाल स्त्री करवा प्रतिपाल...।'

अर्थात निष्कलंक अवतार के साथ एक चैतन्य पुरुष रहेगा। यह दैत्य-दानवों व चौदह मस्तकधारी

कालिंगा का नाश कर चारों युगों के बंधनों को तोड़ कर सतयुग की स्थापना करेगा। इस पुरुष की लंबाई 32 हाथ लिखी हुई है। यह अवतार गौ, ब्राह्मण प्रतिपाल होगा तथा धर्म की स्थापना करेगा। इसके बाद सर्वत्र शांति, आनन्द और समृद्धि का प्रभाव होगा।

भक्तों की मान्यता है कि वे जिस देवता की पूजा कर रहे हैं वो कलयुग में भगवान विष्णु के कल्कि अवतार के रूप में अवतरित होंगे। डूंगरपुर जिले के साबला गांव में हरि मंदिर है। यहां कल्कि अवतार की पूजा हो रही है। हरि मंदिर के गर्भगृह में श्याम रंग की अश्वारूढ़ निष्कलंक मूर्ति है, जो लाखों भक्तों की श्रद्धा और विश्वास का केंद्र है।

जनकुंवरी ने बनवाया था विष्णु मंदिर

मावजी की पुत्रवधू जनकुंवरी ने ही बेणेश्वर धाम पर सर्वधर्म समभाव के प्रतिक विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया। इसके बारे में मावजी की वाणी में स्पष्ट कहा गया है- सब देवन का डेरा उठसे, निकलंक का डेरा रहेसे, अर्थात सब कुछ नष्ट हो सकता है, लेकिन कलियुग में अवतार लेने वाले निष्कलंक का एक मंदिर रहेगा। यहां सभी धर्मों के लोगों को आश्रय प्राप्त होगा। सभी लोग इसे प्रेम से अपना मानेंगे।

अदभुत प्रतिमा, घोड़े पर सवार

भगवान के भावी अवतार निष्कलंक भगवान की यह अदभुत प्रतिमा घोड़े पर सवार है। इस घोड़े के तीन पैर भूमि पर टिके हुए हैं जबकि एक पैर सतह से थोड़ा ऊंचा है। मान्यता है कि यह पैर धीरे-धीरे भूमि की तरफ झुकने लगा है। जब यह पैर पूरी तरह जमीन पर टिक जाएगा तब दुनिया में परिवर्तन का दौर आरंभ हो जाएगा। संत मावजी रचित ग्रंथों एवं वाणी में इसे स्पष्ट किया गया है। यहां कई मंदिर बने हुए हैं, जिनमें विष्णु के भावी अवतार कल्कि की मूर्तियां स्थापित हैं और इनकी रोजाना पूजा-अर्चना भी होती है। संत मावजी महाराज के अनुयायी पिछले 300 वर्षों से इस भावी अवतार की प्रतीक्षा में जुटे हुए हैं। संत मावजी महाराज लाखों लोगों की आस्थाओं से जुडे बेणेश्वर धाम के आद्य पीठाधीश्वर रहे हैं। यह है संत मावजी संत मावजी महाराज का जन्म साबला गांव में विक्रम संवत् 1771 में माघ शुक्ल पंचमी को हुआ। इसके बाद लीलावतार के रूप में मावजी का प्राकट्य संवत् 1784 में माघ शुक्ल एकादशी को हुआ। उन्हें भगवान श्रीकृष्ण का लीलावतार माना जाता है। संत मावजी की स्मृति में बेणेश्वर धाम में हर साल माघ पूर्णिमा पर विशाल मेला भरता है। इसे आदिवासियों का महाकुंभ भी कहा जाता है।

मावभक्त इसी अवतार की करते है पूजा-अर्चना

देश के विभिन्न हिस्सों में फैले लाखों माव भक्त इन्हीं निष्कलंक भगवान का पूजन-अर्चन करते है। निष्कलंक संप्रदाय के विश्व पीठ हरि मंदिर पर न तो कोई गुम्बद है और न ही मंदिर की आकृति, बल्कि यह गुरु आश्रम के रूप में ही अपनी प्राचीन शैली में बना हुआ था। वर्तमान में इसका भव्य स्वरूप तैयार हो रहा है। निष्कलंक संप्रदाय के मंदिर साबला, पुंजपुर, वमासा, पालोदा, शेषपुर, बांसवाड़ा, फतेहपुरा, घूघरा, पारड़ा, इटिवार, संतरामपुर आदि जगहों पर अवस्थित हैं। इन सभी मंदिरों में शंख, चक्र, गदा, पद्म सहित श्वेत घोड़े पर सवार भावी अवतार निष्कलंक भगवान की चतुर्भुज मूर्तियां हैं।